19

व्यक्तित्व का विकास

* ए.एस. इनाम शामी

प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्याय व्यक्तित्व की अवधारणा तथा समाजकार्य व्यवहार के लिए व्यक्तित्व के अध्ययन के महत्व के बारे में जानकारी प्रदान करती है। यह व्यक्तित्व के निर्धारक तत्वों एवं व्यक्तित्व के विकास के संरचनात्मक स्वरूप पर भी प्रकाश डालती है। इस कार्य के अन्तर्गत व्यक्तित्व के बाह्य स्वरूप का वर्णन भी प्रस्तुत किया गया है। इस इकाई के अन्तर्गत व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्रस्तुत की गई है।

व्यक्तित्व की परिभाषा

व्यक्तित्व अत्यधिक उपयोग किए जाने वाला शब्द है तथा इसके साथ अनेक अर्थ जुड़े हैं। आलपोर्ट (1937) के अनुसार इस शब्द के कम से कम पचास भिन्न–भिन्न अर्थ मान्य है। इन्होंने स्पष्ट किया है कि "व्यक्तित्व" शब्द मूलरूप से लैटिन भाषा के शब्द 'पर्सोना' से लिया गया है। आलपोर्ट यह भी इंगित करते है कि सिसेरो के लेखों में "व्यक्तित्व" कम से कम चार महत्वपूर्ण अर्थों में प्रयोग किया गया है। प्रथम यह कि व्यक्तित्व, व्यक्तिगत गुणों के एकीकरण के रूप में मान्य है। इस भाव में अभिनेता का व्यक्तित्व सन्दर्भित होता है। दसरे. व्यक्तित्व उस रूप में माना जाता है कि व्यक्ति को अन्य लोग देखते व समझते में निर्वाह की जा रही भूमिका का प्रतिनिधित्व के आधार पर निर्धारित किया जाता है अर्थात् एक व्यावसायिक, सामाजिक या राजनीतिक भूमिका जैसे नाटक में चरित्र। अन्तिम, व्यक्तित्व विशिष्टताओं और मान्यता के गुणों को सन्दर्भित करता है। यह एक सितारे की अपने व्यक्तित्व को संबद्ध करता है। व्यक्तित्व की अनेक परिभाषाएँ हैं। आलपोर्ट (1937) ने इन परिभाषाओं को कुल छः समूहों में वर्गीकृत किया है। जिनमें तीन महत्वपूर्ण एवं सर्वमान्य परिभाषाएँ निम्न प्रकार हैं:

* प्रो. ए.एस. इनाम शामी, एम जी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

सामाजिक मूल्य के रूप में व्यक्तित्व

आलपोर्ट (1924) ने व्यक्तित्व को परिभाषित करते हुए कहा है कि सामाजिक उद्दीपक तथा व्यक्ति द्वारा उसके अपने पर्यावरण के सामाजिक स्वरूपों के अनुकूलन के गुणों के प्रति व्यक्ति की चारित्रिक प्रतिक्रिया ही व्यक्तित्व है। गुथरी के अनुसार "व्यक्तित्व" वे आदतें तथा सामाजिक महत्व की आदतों का तन्त्र है जो स्थिर रहता है और परिवर्तन का प्रतिरोध करता है।

स्ट्रेन्जर (1961) ने व्यक्तित्व को सामाजिक मूल्यों से सम्बन्धित दो अर्थों में इंगित किया है–

i) उद्दीपन के मूल्य रूप में व्यक्तित्व

इससे स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व, व्यक्ति या व्यक्तित्व का अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों पर प्रभाव है या समाज में एक व्यक्ति दूसरे को किस रूप में प्रभावित करता है। यदि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को तेजी से एवं सरलता पूर्वक प्रभावित करता है तो उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली माना जाता है। ऐसा दैनिक जीवन में भलीभाँति देखा जा सकता है कि वह व्यक्ति जिसमें उच्चस्तरीय उद्दीपन मूल्य होता है या जो हमें सरलता से आकर्षित अथवा प्रभावित करता है उसके बारे में हम कहते हैं कि वह अच्छे व्यक्तित्व वाला है। मगर व्यक्तित्व की यह विचारधारा वैज्ञानिक नहीं है क्योंकि भिन्न–भिन्न व्यक्तियों का दृष्टिकोण बिल्कुल भिन्न होता है।

ii) प्रतिदर्श के रूप में व्यक्तित्व

उद्दीपन के रूप में व्यक्तित्व के सम्बन्ध में प्रस्तुत वर्णन की सीमाओं को दृष्टिगत रखते हुए, व्यक्तित्व को प्रतिदर्श के सन्दर्भ में परिभाषित किया गया है। "प्रतिदर्श के रूप में व्यक्तित्व" के सन्दर्भ में गुथरी और आलपोर्ट ने दो परिभाषाएँ प्रस्तुत की है। इस प्रकार व्यक्तित्व को परिभाषित करने का लाभ यह है कि वाह्य प्रतिमानों के आधार पर व्यक्तित्व का अध्ययन करना सम्भव हो सकता है। परन्तु इस प्रकार की परिभाषा भी त्रुटिपूर्ण है क्योंकि व्यक्तित्व केवल प्रतिदर्शों के समूह का ही प्रतिनिधित्व नहीं करती वरन् इसके अन्तर्गत उद्दीपन मूल्य भी निहित होता है।

मध्यवर्ती–चर के रूप में व्यक्तित्व

आलपोर्ट (1937) ने व्यक्तित्व को एक मध्यवर्ती चर के रूप में परिभाषित किया है। इनके अनुसार "व्यक्तित्व, व्यक्ति के उन मनोशारीरिक तन्त्रों का उसमें निहित गतिशील संगठन है जो पर्यावरण के साथ उसके अद्वितीय समायोजन के निर्धारक तत्व होते है।"

मन (1953) के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति की संरचना के अधिकांश चारित्रिक गुणों, जैसे व्यवहार के स्वरूप, रुचि, मनोवृत्ति, क्षमता, योग्यता तथा अभिक्षमताओं का समाकलन है।"

व्यक्तित्व के विशेषगुण

क्रच एवं क्रेचफील्ड (1958) ने विशेषगुण को परिभाषित करते हुए बताया है कि यह व्यक्ति के विशिष्ट गुणों का विशेषक है जिसके द्वारा व्यक्ति समस्त परिस्थितियों में सकारात्मक व्यवहार करता है। व्यक्तित्व को तुलनात्मक क्रियाकलापों तथा अवलोकन के क्रियाकलापों के द्वारा जाना जा सकता है। किसी व्यक्ति का अवलोकन उसकी अतिशीघ्र या सचेत या शुद्ध या इन सभी के सन्दर्भ में प्रतिक्रिया के आधार पर किया जा सकता है। ये ऐसी सम्पत्तियाँ है जो सम्पूर्ण के आधार पर विश्लेषण के मार्ग में अवरोध के रूप में, विद्यमान होती हैं, यही पक्ष या सम्पत्तियों जिन पर हम यहाँ विचार कर रहे हैं, "विशेषगुण" हैं। ये "विशेषगुण" व्यवहार सम्बन्धी भी होते है तथा दैहिक भी होते हैं।

आलपोर्ट ने व्यक्तित्व के विशेषगुणों को निम्नलिखित आठ स्वरूपों में परिभाषित करने का प्रयास किया है–

i) विशेषगुण की उपस्थिति नाममात्र से अधिक होती है अर्थात् इसको ये

ii) विशेषगुण आदतों की तुलना में अधिक सामान्य होते हैं।

iii) विशेषगुण गतिशील होते हैं अथवा कम से कम निर्धारक के रूप में अवश्य होते हैं।

iv) विशेषगुणों की उपस्थिति सांख्यिकी एवं अनुभव के आधार पर स्थापित की जा सकती है।

v) व्यक्तित्व के अनेक विशेषगुण एक दूसरे पर आश्रित नहीं होते।

vi) मनोवैज्ञानिक आधार पर नैतिक गुण व्यक्तित्व के विशेषगुण नहीं होते।

vii) कार्य–गुण अथवा आदत जो विशेषगुण के अनुरूप या पक्ष में नहीं होते उनसे विशेषगुण की विद्यमानता का साक्ष्य नहीं मिलता।

viii) विशेषगुण अद्वितीय तथा सारभौमिक होते हैं।

मानव विशेषगुण के सम्बन्ध में एक वृहद् स्तरीय विश्लेषण के आधार पर आलपोर्ट ने एक विशेषगुण सिद्धान्त प्रस्तावित किया है। जिसके आधार पर विशेषगुण के सम्बन्ध में कुछ निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

1) व्यक्तित्व–विशेषगुण उपयुक्त व्यवहार अथवा अवरोध (व्यवहार के चयन में सहायता प्रदान करता है।

2) विशेषगुण का प्रत्यक्ष अवलोकन सम्भव नहीं होता परन्तु उनके बारे में किसी परिणाम पर पहुँचा जा सकता है।

3) आदतें विशेषगुण को निर्धारित नहीं करती परन्तु एक नई आदत विकसित करने में विशेषगुण सहायक हो सकता है।

4) विशेषगुण व्यवहार की उत्पत्ति एवं निर्देशन करते है।

5) आलपोर्ट के अनुसार कुछ महत्वपूर्ण विशेषगुणः नियमितता, आक्रोश, प्रसन्नता, प्रतिस्पर्धा, अनोखापन, सामूहिकता, प्रभावितता आदि है।

6) सामान्य विशेषगुणों की सहायता से सामान्य व्यक्तियों के समायोजन के स्तर की तुलना की जा सकती है।

7) विशेषगुणों के समूहों को आलपोर्ट ने संरक्षण की संज्ञा दी है।

8) आलपोर्ट ने समस्त विशेषगुणों को तीन प्रमुख समूहों में वर्गीकृत किया है–

i) **प्रमुख विशेषगुण**–इस प्रकार के विशेषगुण अधिक प्रभावशाली होते हैं तथा इनका मुख्य कार्य संवेगों को नियन्त्रित करना होता है। इनकी संख्या बहुत कम होती है।

ii) **केन्द्रीय विशेषगुण**–ये विशेषगुण व्यक्ति के व्यवहार के केन्द्र बिन्दु को सुनिश्चित करने में सहयोग करते हैं। प्रायः ऐसे विशेषकों को व्यक्ति को प्रखण्डों के निर्माणकर्त्ता के रूप में स्वीकार किया जाता है।

iii) **द्वितीय विशेषगुण**–ये विशेषगुण कुछ व्यक्तिगत विशेषगुण होते हैं और कुछ सामान्य विशेषगुण होते हैं। व्यक्तिगत विशेषगुण वास्तविक लक्षणों के रूप में माने जाते हैं। सामान्य विशेषगुण अनेक व्यक्तियों में पाए जाते हैं। इनका उपयोग अनेक व्यक्तिगत–विशेषगुणों के प्रमाप के आधार के रूप में किया जाता है।

आर.बी. कैटेल ने व्यक्तिगत विशेषगुणों के क्षेत्र में अनेक अध्ययन किए हैं। इन्होंने सुनिश्चित किया कि व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए कुल 171 विशेषगुणों का अध्ययन करना अनिवार्य है।

व्यक्तित्व विकास के निर्धारक तत्व

प्रत्येक व्यक्ति में हम अद्वितीयता पाते हैं। कुछ लोग अपराधी होते हैं तो कुछ विधि एवं नियम का अनुपालन करने वाले नागरिक, कुछ नशाखोर होते हैं और कुछ अन्य सौम्य, कुछ कुसमायोजित और कुछ अन्य भली भाँति समायोजित होते हैं। व्यक्तित्व के

विकास एवं प्राकार्यता के अन्तर्गत निश्चित सिद्धान्त हैं जो व्यवहार के स्वरूपों में भिन्नता को समझने में हमें योग्य बनाते हैं। इनमें आनुवंशिकता एवं पर्यावरण की प्रभाविकता निहित होती है।

क) जैविक कारक

इन कारकों के अन्तर्गत प्रजनन सम्बन्धी कारक तथा हारमोन सम्बन्धी कारक सम्मिलित होते हैं। हमें इन कारकों की कुछ विस्तार से समीक्षा करनी है।

प्रजनन सम्बन्धी कारक

प्रत्येक व्यक्ति जन्मजात रूप से अपने माता–पिता से, जीनी–विशिष्टताओं को प्राप्त करता है जो शारीरिक क्षमताएँ जैसे मांसपेशियाँ, ग्रन्थियाँ, संवेद इन्द्रियाँ, तन्त्रिका आदि प्राप्त करता है। ये समस्त अंग किसी व्यक्ति के प्रौढ़ व्यक्ति के रूप में विकसित होने के लिए अनिवार्य होते हैं। आनुवंशिकता केवल विकास की क्षमता ही नहीं प्रदान करती वरन् ये व्यक्तिगत भिन्नता का भी साधन या स्रोत हैं जैसाकि ये किसी अन्य चीज से अधिक अनेक निश्चित विशेषगुणों के निर्धारण को प्रभावित करता है। शारीरिक संरचना एवं विभिन्न संवैधानिक कारक जैसे संवेदनशीलता, शक्ति, रोग निरोधक तथा बौद्धिक क्षमता आदि अत्यन्त स्पष्ट रूप से आनुवंशिकता से प्रभावित होते हैं। इसी प्रकार जीनी–कारक शारीरिक अंगों की सम्पूर्ण प्रकार्यात्मकता को प्रभावित कर सकती है और व्यक्ति की शारीरिक रोगों से प्रतिरोध की क्षमता को क्षीण कर सकती है। व्यक्ति की आनुवंशिकता का सबसे अधिक अद्वितीय पक्ष मस्तिष्क में विद्यमान होता है जो विश्व में सर्वाधिक संगठित यन्त्र के रूप में है। मस्तिष्क अत्यन्त अचरजपूर्ण संचार के आधुनिक माध्यम उत्पन्न करता है जिसमें मानव अंगों के सम्पूर्ण प्राकार्यात्मकता को समेकित करने की क्षमता होती है जिससे मस्तिष्क नए अनुभवों को संकलित तथा सुरक्षित तथा तर्क, कल्पना एवं समस्या समाधान करता है। ये समस्त जैविक कारक हैं, जो व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करते हैं इनमें से कुछ महत्वपूर्ण कारकों का वर्णन निम्नलिखित है :

1) अन्तःस्रावी गन्थियाँ

इन ग्रन्थियों से बिना किसी नलिका के प्रत्यक्ष रूप से स्राव होता है। इन ग्रन्थियों से जो स्राव होता है उसे हारमोन कहते हैं जो व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

i) **अग्न्याशय गन्थियाँ** : इस ग्रन्थि का सम्बन्ध डियोडेनम नलिका से होता है। इससे पाचक रस का स्राव होता है। इन कोशिकाओं से शरीर में इन्सूलिन का स्राव होता है जो रक्त शर्करा को निष्क्रिय करता है।

ii) **अवटु ग्रन्थि :** इस ग्रन्थि से होने वाले स्राव को थाइरोक्सिन कहते हैं जो शारीरिक वृद्धि की गति एवं दर को प्रभावित करता है।

iii) **पराअवुट ग्रन्थि :** इस ग्रन्थि का मुख्य कार्य कैलसियम की मात्रा को नियन्त्रित करना है। जिसके कारण शरीर की अस्थियों एवं दाँतों का विकास उपयुक्त रूप से होता है ऐसा तभी होता है जब इस ग्रन्थि का स्राव सामान्य और उपयुक्त हो।

iv) **अधिवृक्क गन्थि :** इस ग्रन्थि से होने वाले स्राव को एडेरिन कहते हैं जो व्यक्तित्व को सुडौल बनाता है। इसका स्राव रक्त की आपूर्ति को उद्दीपित करता है तथा यकृत को प्रभावित करता है। इसके फलस्वरूप शारीरिक थकान कम होती है तथा शरीर का उच्छिष्ट शरीर से बाहर निकलता है।

v) **पीयूष ग्रन्थि :** इस ग्रन्थि के अग्र भाग से हारमोन स्रावित होता है जो अन्य ग्रन्थियों के स्राव को नियन्त्रित करता है तथा इसके पिछले भाग का स्राव पिटूट्रिन मांसपोशि को उद्दीपित करता है।

vi) **जनन ग्रन्थि :** इन ग्रन्थियों के स्राव को जननग्रन्थि हारमोन स्राव की संज्ञा दी जाती है जो प्रोगैस्ट्रिन, ऐन्ड्रोजेन तथा ऐस्ट्रोजेन नामों से जाना जाता है। इन स्रावों से पुरुष में पुरुषत्व विशेषगुण एवं स्त्रियों में स्त्रियित्व सम्बन्धी गुण विकसित होता है।

2) शारीरिक गठन एवं स्वास्थ्य

व्यक्ति को उत्तर शारीरिक संरचना एवं गठन से उसकी सुयोग्यता का विकास होता है। यह भी है कि यदि व्यक्ति की शारीरिक संरचना दोषपूर्ण होगी तो वह अनेक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं से पीड़ित होगा।

3) देह–रसायन

मस्तिष्क एवं शरीर के विभिन्न केन्द्रों में अनेक रासायनिक परिवर्तन होते रहते हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। यदि रासायनिक परिवर्तन सन्तुलित एवं उपयुक्त नहीं होते तो व्यक्ति अनेक समस्याओं से ग्रस्त होता है। जैसे मांसपेशियों में ग्लाइकोजेन की कमी से व्यक्ति बहुत शीघ्र थक जाता है तथा वह आलसी, उदास, कुण्ठित तथा चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाएगा।

4) परिपक्वता एवं व्यक्तित्व

परिपक्वता के आधार पर देखा जा सकता है कि कोई व्यक्ति क्या और कैसे सीखेगा। व्यक्तित्व के अनेक विशेषकों का विकास सीखने पर आधारित होता है। यदि परिपक़्वता समुचित नहीं होगी तो व्यक्ति का व्यक्तित्व एवं सीखना कुप्रभावित होगा।

5) जेनिटिक एवं दैहिक कारक

प्रायः बच्चों के चारित्रिक गुण उसके माता–पिता की तरह पाए जाते हैं। ऐसा बच्चे की आनुवंशिकता तथा अभिभावकों द्वारा उत्पन्न किए गए पर्यावरण जिसमें वह विकसित हो रहा है के कारण होता है। जुड़वा बच्चों पर आधारित अनेक अध्ययनों से ज्ञात होता है कि व्यक्तित्व का विकास आनुवंशिकता से प्रभावित होता है। यह भी अवलोकन किया गया कि गर्भ के दौरान माता के क्रियाकलाप, उसका आहार, फीटस, आवश्यकताएँ, सांवेगिक स्तर आदि नवजात शिशु के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

ख) पर्यावरणीय कारक

किसी व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक विकास उसके पर्यावरण में विद्यमान प्रभावशाली कारकों के आधार पर स्थाई स्वरूप ग्रहण करता है। यहाँ तक कि समान आनुवंशिकता के लोगों में भी विभिन्न चारित्रिक गुण पाए जाते हैं। सामाजिक–सांस्कृतिक पर्यावरण व्यक्ति के विकास को, जो भाषा वह बोलता है उसके सीखने, जिन रीतियों का वह अनुपालन करता है, जिन मूल्यों में वह विश्वास करता है और जिन क्षमताओं को वह जीवन की समस्याओं के निराकरण के लिए विकसित करता है, के माध्यम से नाटकीय ढंग से प्रभावित करता है। हम ऐसा पाते है कि लोगों का समूह, समूह के छोटे सदस्यों को क्रमशः (शिक्षण द्वारा विशिष्ट संस्कृति संचारित करता है। इस प्रकार का व्यवहार समूहों के समस्त सदस्यों को किसी सीमा तक समरूपता प्रदान करता है अथवा लिन्टन (1945) ने इंगित किया है कि "मूल व्यक्तित्व के प्रकार" स्थापित करता है।

मीड (1949) के अनुसार जिन व्यक्तियों का लालन–पालन ऐसे समाज में होता है जो हिंसा की अनुमति नहीं देती वे अपने विरोधों को अहिंसा के रास्ते से ही निस्तारित करते हैं। न्यूग्युनिया में समान सामाजिक मूल एवं समान सामान्य, भौगोलिक परिक्षेत्र में निवास करने वाली दो जन जातियों में परस्पर विरोधी चारित्रिक गुण पाया गया अरापेश जनजाति सहृदय, शांतिपूर्ण, सहयोगी पाई गई जबकि मुण्डूगूमर जनजाति, लड़ाकू, संशकित, प्रतिस्पर्धा–पूर्ण तथा बदला लेने वाली पाई गई। ये भिन्नताएँ सामाजिक परिस्थितियों के कारण पाई गई।

प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय प्रकार के उप समूहों से सम्बन्धित होता है तथा अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों के अद्वितीय तरीके का अनुभव करता है। व्यक्ति के आधार पर सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण में सहभागिता में भिन्नता हो सकती । यह कहा जा सकता है कि सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण भिन्नता का कारण होता है व्यक्तित्व के तत्वों में भी विभिन्नता पाई जाती है। पर्यावरणीय कारक दो वर्गों में वर्गीकृत किए जा सकते हैं–

i) भौगोलिक कारक

ii) सामाजिक कारक

सामाजिक कारकों का संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है–

1) माता/पिता सम्बन्धी कारक

i) माता का महत्व

इस क्षेत्र में किए गए अनेक शोधकार्यों से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के सम्पूर्ण पर्यावरणीय कारकों के अन्तर्गत व्यक्ति सर्वाधिक प्रारम्भिक अवस्था में सबसे अधिक माता के साथ सम्बन्धों से प्रभावित होता है। हार्लो (1966) ने बन्दर के बच्चे पर एक शोध अध्ययन किया जिससे स्पष्ट होता है कि प्रारम्भिक विकास के दौरान एकाकीपन के कारण बन्दर का बच्चा अन्य साथियों के साथ स्वस्थ्य सामाजिक सम्बन्ध (1963) बनाने में असफल रहा। लगभग यही परिणाम स्पित्ज (1949) तथा योरो के अध्ययनों में भी पाया गया। प्रारम्भ में माता से वंचित होने के कारण व्यक्तित्व विकास में विकृति पायी जाती है।

ii) पिता का महत्व

माता की भाँति ही पिता की उपस्थिति और अनुपस्थिति बच्चे के व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। मिसकेल (1958) ने पाया कि बच्चे का समाजीकरण एवं विकास पिता की अनुपस्थिति से प्रभावित होता है। विशेषकर पिता एवं बच्चे का सम्बन्ध बच्चे के यौन सम्बन्ध को प्रभावित करता है।

iii) अन्य पारिवारिक सदस्य

ऐसा अवलोकन किया गया कि यदि परिवार के सदस्य बच्चे को स्नेह देते हैं, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता करते हैं, उसे अच्छी आदतें सिखाते हैं तो यह बातें निश्चित रूप से बच्चे के व्यक्तित्व में सकारात्मक पक्ष विकसित करने में सहायता प्रदान करते हैं।

iv) परिवार का आकार

सामान्यतः व्यक्तित्व के विकास को परिवार का आकार भी प्रभावित करता है। यदि परिवार में अधिक सदस्य होते हैं तो बच्चे की भाषा एवं अन्य मानसिक क्षमताएँ तीव्र गति से विकसित होती है। इसके विपरीत यदि बच्चा परिवार में एक मात्र होता है तो परिवार के सदस्यों द्वारा अधिक देख–रेख प्यार और स्नेह तथा वात्सल्य के कारण बच्चा दुराग्रही एवं उदण्ड हो जाता है।

क) परिवार का आर्थिक स्तर

परिवार की आर्थिक स्थिति भी व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। निर्धन परिवार के बच्चों में असुरक्षा एवं आत्म हीनता की भावना विकसित हो जाती है। इसी प्रकार सुविधाओं एवं पोषाहार की कमी के कारण उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

2) विद्यालय एवं समसमूह

पड़ोस एक ऐसा महत्वपूर्ण कारक है जो व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करता है। बच्चे अनेक आदतें एवं व्यवहार पड़ोस में रहने वाले उन बच्चों से सीखते हैं जिनके साथ अन्तःप्रक्रिया करते हैं। पड़ोस के बच्चों के साथ अन्तःक्रिया करने से उसका बौद्धिक एवं सांवेगिक विकास भी प्रभावित होता है। एक निश्चित आयु का हो जाने पर बच्चा स्कूल जाने लगता है तथा स्कूल और समुदाय की स्थिति में समायोजन के प्रतिमानों का अनुभव करने लगता है। बच्चा विद्यालय में अध्यापक के व्यवहार तथा विद्यालयी पर्यावरण से प्रभावित होता है। बच्चे का स्वप्रत्यक्षीकरण प्रायः विद्यालय के अनुभवों के गुणों से स्पष्ट रूप से सम्बद्ध पाया जाता है। इस प्रकार बच्चे का सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास विद्यालय के वातावरण एवं समवयी समूह द्वारा संरचित होता है।

3) सांस्कृतिक कारक

संस्कृति जिसमें कोई व्यक्ति रहता है, एक महत्वपूर्ण कारक है जो बच्चे के व्यवहार और विकास को प्रभावित करती है। विभिन्न समाजों में सांस्कृतिक भिन्नताएँ होती हैं तथा बच्चे के व्यक्तित्व का स्वरूप संस्कृति के विभिन्न स्वरूपों द्वारा संरचित होता है। बच्चों के लालन–पालन के प्रतिमान, मूल्य, आदर्श तथा प्रोत्साहन–पक्ष एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में भिन्न होता है। विभिन्न संस्कृतियों में सहभागी अर्थ एवं व्यवहार का विद्यमान होना व्यक्तित्व के विभिन्न विशेषगुणों के विकास में सहायक होते हैं।

विकास के प्रतिमान

व्यक्ति के विकास के अध्ययन के लिए मुख्य रूप से विश्लेषण के तीन स्तरों को विचारधीन रखना होगा :

i) **जैविकी तंत्र** : शरीर में निकटतम समन्वयित शरीरक्रियात्मक अन्तःक्रियाएँ।

ii) **मनोवैज्ञानिक तंत्र अथवा व्यक्तित्व** : यह उद्देश्य, योग्यता, मान्यता तथा आत्म को घेरे समेकित रक्षा युक्तियों की संगठित अन्तःक्रिया सम्मिलित होती है। तथा

iii) **समाजशास्त्रीय या समूह तन्त्र : इसके अन्तर्गत व्यक्ति की अपने परिवार या वृहद् समूह के सन्दर्भ में उसकी अन्तःक्रियाएँ होती है।**

उपयुर्क्त तीनों कारक अथवा विश्लेषण के स्तर व्यक्ति और उसकी प्रकार्यात्मकता को पूर्णतः समझने के लिए महत्वपूर्ण है। यह तीनों कारक व्यक्ति के व्यक्तित्व संरचित करने तथा व्यक्तित्व के विकास और वृद्धि को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं।

अतः इस बात को विचाराधीन रखना महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति में परिवर्तन अथवा विकास सदा एक प्रतिमानित परिवर्तन होता है। समस्त अन्तःक्रियात्मक तत्व तन्त्र इन परिवर्तनों के प्रतिमान को संरचित करने में सम्मिलित होते हैं।

विकास निर्धारण

मानव विकास एक सुनिश्चित निर्धारित क्रम में चलता हैं जो केवल शारीरिक और प्रेरक विकास में ही नहीं वरन् सांवेगिक, बौद्धिक तथा सामाजिक विकास के क्षेत्र में भी होता है। इस प्रकार एक शिशु चलने के पूर्व खिसकना और बैठना शुरू करता है, उसकी प्रारम्भिक सामान्य संवेगात्मक प्रतिक्रियाएँ प्रेम मनोरंजन एवं दुख में बदल जाती है। भाषा–व्यवहार भी दैव व्यक्तीकरण से शब्दोच्चारण की दिशा में प्रगति करता है जो विचारों का साधन बनता है।

विकास की प्रक्रिया शिक्षण और परिपक्वता की शक्तियों द्वारा संचालित होती है। परिपक्वता सम्बन्धी प्रक्रिया हमारे शारीरिक संरचना के विकास को निर्देशित करती है तथा शिक्षण के मार्ग को प्रशस्त करती है, लेकिन हम जो कुछ किसी परिस्थितियों में सीखते हैं वह परिपक्वता पूर्ण सीखने की इच्छा और हमने जो पूर्व में शिक्षा प्राप्त की है–पर आधारित होता है। यह भी देखा गया कि विकास का प्रत्येक नया स्तर, पूर्व के विकास द्वारा सीमाबद्ध होता है तथा उपयुक्त समय पर प्रभाव डालता है तथा विकास की सफलतापूर्ण अवस्था के अंग के रूप में बना रहता है।

विकास कार्य

मानवीय विकास वृहद् रूप से छः मुख्य अवस्थाओं में विभाजित होता है। प्रत्येक अवस्था में परिपक्वात्मक तथा सामाजिक दबाव कुछ विशिष्ट कार्यों को सुनिश्चित करते हैं जिस पर व्यक्ति संचालित करने में सक्षम होता है। यदि वह विकास की सामान्य स्थिति बनाए रखता

व्यक्ति संचालित करने में सक्षम होता है। यदि वह विकास की सामान्य स्थिति बनाए रखता है। अगर उचित्र विकास की अवस्था में कुछ कार्यों पर अधिपत्य नहीं बनाया जाता तब व्यक्ति अपरिपक्वता और अक्षमता से पीड़ित होता है जो स्थाई रहने पर उसके भावीं विकास की अवस्थाओं में समायोजन को अवरूद्ध करता है।

मानव जीवन की छः अवस्थाओं के विकासात्मक कार्यों जैसाकि ऐरिक्सन (1950), हैविगहर्स्ट (1952), केगन एण्ड मोस (1962) तथा विटमर एण्ड कोटिन स्काई (1952) वर्णित किया है, निम्न प्रकार है–

व्यक्तित्व–विकास एवं समायोजन

जीवन की विभिन्न अवस्थाओं के विकासात्मक कार्य

शैशव और प्रारम्भिक बाल्यावस्था (06 वर्ष)

शैशवावस्था में और बात करना सीखना। ठोस खाना खाना तथा मलमूत्र त्याग पर नियन्त्रण करना सीखना। शरीरक्रियात्मक स्थिरता प्राप्त करना। अपने आप तथा दूसरों के प्रति विश्वास करना। माता–पिता, भाई–बहनों एवं अन्य लोगों से स्वयं को सम्बद्ध करने का कार्य सीखना। अपने यौन से आत्मसात स्थापित करना। भौतिक एवं सामाजिक वास्तविकता के प्रति साधारण आवधारणा विकसित करना। सामान्य सुरक्षा के नियमों पर आधिपत्य बनाना। गलत तथा सही के बीच भेद करना सीखना तथा इस सम्बन्ध में नियमों और अधिपति को स्वीकार करना।

मध्य बाल्यावस्था (6–12 वर्ष)

मध्य बाल्यावस्था शारीरिक एवं भौतिक संसार के बारे में विस्तृत जानकारी एवं ज्ञान प्राप्त करना। स्वयं के प्रति सम्पूर्ण मनोवृत्ति स्थापित करना। स्त्री एवं पुलिंग की समुचित सामाजिक भूमिका सीखना। अन्तःमन की भावनाओं, नैतिकता तथा मूल्यों का प्रमाप विकसित करना। लिखना, पढ़ना एवं जोड़–भाग करना सीखना तथा अन्य मूलभूत बौद्धिक कौशल सीखना। शारीरिक कुशलता सीखना। सामाजिक समूहों तथा अन्य संस्थाओं के प्रति मनोवृत्ति विकसित करना। विजय प्राप्त करना तथा अपने समवयी साथियों में अपना स्थान बनाए रखना। आदान–प्रदान करना तथा दायित्वों की सहभागिता ग्रहण करना। वैयक्तिक स्वतन्त्रता प्राप्त करना।

किशोरावस्था (12–18 वर्ष)

किशोरावस्था आत्म निर्भरता एवं अपने अस्तित्व की समझ स्पष्ट करना। अपने शरीर को स्वीकार करना तथा शारीरिक परिवर्तन के साथ समायोजित होना। स्त्री व पुलिंग

शैशवाकाल में रुचि एवं सांवेगिक भावनाएं समलिंगी सदस्यों की ओर निर्देशित होती है। यौवनारम्भ के साथ विषमलिंगी भिन्नताएं तीव्रगति से प्रगति करती हैं। लैंगिक व्यवहार में परिपक्वता केवल निर्देशित ही नहीं होती वरन् विपरीत लिंग के सदस्य के प्रति इच्छा सम्मिलित होती है।

6) नैतिक के प्रति अनैतिक

नवजात शिशु को अच्छे या बुरे, सही या गलत की अवधारणा का ज्ञान नहीं होता। धीरे–धीरे वह मूल्य मान्यताओं के प्रतिमान सीखता है जो आन्तरिक निर्देशक के रूप में कार्य करते हैं या व्यवहार को नियन्त्रित करते हैं जिसको हम उसकी अन्तरात्मा या पराह के रूप में सन्दर्भित करते है।

7) आत्म केन्द्रित से अन्य केन्द्रित

परिपक्वता की दिशा में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मार्ग व्यक्ति का धीरे–धीरे मात्र अपने आप के बारे में विचार करने तथा अपनी आवश्यकताओं तक सीमित रहने की स्थिति से सामाजिक उत्तर दायित्वों को समझने और स्वीकार करने तथा मानवीय कार्यों में सम्मिलित होने तक है। इसके अन्तर्गत अपने परिवार को प्यार प्रदान करने की क्षमता तथा सामान्य रूप से अपने समूह और समाज के कल्याण में योगदान देना सम्मिलित किया जाता है।

विकास में विभिन्नता

सभी मानव विकास की समान अवस्थाओं से विकसित होते हैं वरन् वे जो विशेषक विकसित करते हैं उनमें हम भिन्नता का अवलोकन करते हैं। विशेषगुण शब्द (पद) व्यक्ति की भिन्नता योग्यता तथा तुलनात्मक दृष्टि से सहनशीलता के चरित्र की ओर इंगित करता है। विशेषकों में भिन्नता उदाहरण द्वारा इस प्रकार समझी जा सकती है कि अधिकांश लोग मध्यस्त या सामान्य (औसत) बौद्धिक क्षेत्र में पाए जाते हैं जबकि कुछ लोग उच्चतम छोर की असाधारण बौद्धिक स्तर तथा कुछ लोग दूसरे उच्चतम छोर की मन्दि बुद्धि के पाए जाते हैं।

कुछ भी हो यह भिन्नता एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की तुलना में निम्न बातों के आधार पर हो सकती है–

क) एक निश्चित शारीरिक विशेषक की प्रकृति में जैसे रक्त के स्वरूप तथा त्वचा के रंग में भिन्नता देखी जाती है।

ख) भिन्नताएँ जिसमें एक विशिष्ट विशेषक विकसित होता है।

ग) विशेषकों का समाकलन अथवा उनमें समरूपता तथा

घ) विशेषगुण के सम्पूर्ण प्रतिमान, जिसे हम व्यक्तित्व की संज्ञा देते हैं। एक निश्चित सीमा तक की भिन्नता को हम सामान्य मानते हैं, ये तभी असामान्य मानी जाती हैं जब यह इस उच्चतम सीमा तक हो कि व्यक्ति की अनुकूलन सम्बन्धी क्षमताओं को गम्भीर सीमा तक हानिकारक/विघटनकारी बना दें।

अनेक महत्वपूर्ण कारक हैं जो एक विशिष्ट विशेषगुण को प्रभावित करते हैं। एक व्यक्ति के विकास में विशेषगुण अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। ऐसा तभी होता है जब इसकी स्थिति अत्यधिक उच्च या औसत से निम्न होती है। एक निश्चित विशेषक की सार्थकता सभी विशेषगुणों के प्रतिमानों पर आधारित होती है।

व्यक्तित्व की बाहरी छवि और व्यक्ति के व्यवहार के रूप में

व्यक्तित्व का वाह्य स्वरूप मानव के जैविक अंग से सम्बन्धित होता है। शारीरिक तन्त्र तरल पदार्थ, अस्थि, त्वचा तथा माँसपेशियों संयोजी एवं तन्त्रिका ऊतकों से निर्मित होता है ये तत्व जीवन के शारीरिकक्रिया विज्ञान की रचना करते हैं।

अनेक ऐसे तथ्य विद्यमान हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि 'मन' एवं शरीर एक दूसरे पर आश्रित होते हैं। जब मस्तिष्क क्षतिग्रस्त अथवा इसका छोटा सा अंश निकाल दिया जाता तो व्यक्तित्व में विक्षोभ होता है यद्यपि प्रायः उससे कम होता है जैसा कोई अपेक्षा करता है। वाह्य संरचना के अतिरिक्त यह दूसरों में अपने पक्ष की भावना विकसित करने की इच्छा होती है। प्रथम दृष्टया प्रभाव दूसरों को कुछ चिन्ह प्रदान करता है जिससे वह देखने वाले के व्यक्तित्व को समझ सके। इसके अतिरिक्त, प्रथम दृष्टया प्रभाव यह सुनिश्चित करता है कि अन्य लोग उससे क्या अपेक्षा करेंगे, उनकी अपेक्षाएँ, एक निश्चित समय में उसके व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

किसी व्यक्ति का प्रथम दृष्टया प्रभाव उसकी शारीरिक संरचना पर आधारित होता है, चेहरे का हावभाव या उतार--चढ़ाव, शारीरिक क्रियाकलाप, वस्त्र, नाम, राष्ट्रीयता, प्रजाति और जो व्यक्ति कहता है और कैसे करता है, वह क्या करता है और कैसे करता है या कुछ और शारीरिक या मनोवैज्ञानिक चारित्रिक गुण जिससे अवलोकनकर्ता के मन में एक निश्चित प्रकार के व्यक्तित्व की धारणा विकसित हो जाती है।

वाह्य शारीरिक संरचना के आधार पर शेल्डन ने व्यक्तित्व के निम्नलिखित प्रकारों का वर्णन किया है :

1) **एण्डोमार्फिक** : पहचान स्वरूप इसमें गोलाकार, चिकना, नरम, बड़ा उदर, पतला हाथ–पैर (शाखा) आदि।

2) **मेसोमार्फिक** : इसकी प्रवृत्ति भारी अस्थियाँ व माँस पेशियाँ, चौकोर शरीर आदि है।

3) **एक्टोमार्फिक** : इसकी प्रकृति में पतलापन, हाथ–पैर का सीधा होना तथा दुबला–सुन्दर आदि है।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्थिति के अनुसार उपर्युक्त तीन प्रकारों में से किसी प्रकार का वर्णित किया जा सकता है। शेल्डन के अनुसार व्यक्तित्व का प्रकार स्थितियों में विशिष्ट समाकलन पर निर्भर है। व्यक्ति के प्रकार तथा शारीरिक रूप से उसे वर्णित करने हेतु उपर्युक्त तीन आँकड़े लिए जाते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि बाह्य शारीरिक संरचना एवं व्यक्ति का व्यवहार व्यक्तित्व को समझने के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है।

समाजकार्य व्यवहार के लिए व्यक्तित्व विकास के अध्ययन की आवश्यकता

मानव की मनोसामाजिक और व्यावहारिक समस्याओं के समाधान की दिशा में समाजकार्य व्यवहार एक व्यावसायिक दृष्टिकोण है। यह मानव जीवन से सम्बन्धित, व्यक्तित्व के विकास में वृद्धि सहित, समस्त पक्षों के क्षेत्र में कार्य करता है। कुछ समाज विज्ञानी समाजकार्य को व्यावहारिक विज्ञान के रूप में मानते हैं। यह भी स्वीकार्य किया जाता है कि समाजकार्य द्वारा प्रदत्त सेवाएँ तभी लाभकारी होंगी जब कार्यकर्ता को समस्याएँ तथा मनोलैंगिक विकास की प्रकृति एवं स्तर के बारे में आधारभूत जानकारी प्राप्त होंगी। मनोसामाजिक समस्याओं के निदान एवं उपचार के लिए व्यक्तित्व मूल्यांकन, विकास की विभिन्न अवस्थाओं के कार्य/गुणों के बारे में सामाजिक कार्यकर्ता को जानकारी अवश्य होनी चाहिए। अपनी क्षमता के विकास के लिए व्यक्तित्व–विकास का अध्ययन व्यवहारगत सामाजिक कार्यकर्ता के लिए सहायक होता है।

सारांश

एक सामान्य व्यक्तित्व द्वारा व्यक्तित्व शब्द का उपयोग इसके तकनीकी शब्द के अर्थ से भिन्न अर्थ में उपयोग किया जाता है। एक सामान्य व्यक्ति 'व्यक्तित्व' शब्द का उपयोग केवल व्यक्ति की संरचना के संदर्भ में करता है। व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'परसोना' से हुई है जिसका अर्थ मुखौटा होता है। मनोवैज्ञानिक साहित्य में व्यक्तित्व को विभिन्न कोणों से परिभाषित किया गया है। सर्वाधिक उपयुक्त परिभाषा

'आलपोर्ट' द्वारा दी गई है। कुछ लोग व्यक्तित्व के रूप में ही चरित्र, स्वभाव एवं आत्म का भी उपयोग करते हैं परन्तु इन शब्दों का भिन्न अर्थ है। व्यक्तित्व का विकास प्रारम्भिक शैशवाकाल से आरम्भ होता है।

सभी व्यक्ति अपने आपमें अद्वितीय होते हैं इसलिए व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारकों को समझने की आवश्यकता होती है। आनुवांशिक एवं पर्यावरण व्यक्तित्व के निर्धारकों में महत्वपूर्ण हैं। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के अध्ययन में तीन स्तर के विश्लेषण सम्मिलित होते हैं ये जैविक तंत्र, मनोवैज्ञानिक तंत्र और समाजशास्त्री या समूह तंत्र है। जीवन के विभिन्न अवस्थाओं के अन्तर्गत विभिन्न विकासात्मक कार्य/गुण होते हैं। सभी मानव वृद्धि की समरूप अवस्थाओं से गुजरते हैं लेकिन उनमें विभिन्नता पाई जाती है।

व्यक्तित्व का वाह्य स्वरूप (संरचना) मानव के जैविकी अंग से सम्बन्धित होता है जैसा कि समाजकार्य मानव जीवन के सभी पक्षों से सम्बद्ध होता है इसलिए व्यवहारगत सामाजिक कार्यकर्ता के लिए व्यक्तित्व विकास का अध्ययन करना अत्यन्त औचित्यपूर्ण होता है।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

एच. वर्नर : (1957), कम्परेटिव साइकालोजी ऑफ मेंटल डेवलपमेंट, रिव.इडी. न्यूयार्क, इन्स्ट्. प्रेस।

ओ., स्ट्रन्कः (1958), ऐटीट्यूड टुवर्डस वन्स नेम एण्ड वन्स सेल्फ, इन्डीवीडुअल साइकालोजी, 14, 64–67।